पुस्तक-परिचय

अध्यात्म उपनिषद

ओशो की प्रज्ञा और प्रतिभा विलक्षण है। इसीलिए वह अवर्णनीय, अनिर्वचनीय मालूम होती है। ओशो के रूप में, इस धरती पर क्रांतदर्शी प्रतिभा का एक महान विचारक विचरण कर रहा था।

ओशो का साहित्य पढ़ते वक्त यह पंक्ति बरबस याद हो आती है। ओशो ने जो विभिन्न व्यक्तियों, बुद्धपुरुषों और विषयों पर प्रकट चिंतन किया है, वह उनकी स्वतंत्र दृष्टि की संपन्नता दर्शाता है। कृष्ण, महावीर, बुद्ध, जरथुस्त्र, लाओत्सु, कबीर, मीरा आदि श्रेष्ठतम व्यक्तियों के विचारों की ओशो द्वारा की गई समीक्षा अपूर्व है। अद्वितीयता, नवीनता, सौंदर्य और चेतना की उत्तुंग उड़ान, इन विशेषताओं द्वारा ओशो ने मनुष्य-जाति की ज्ञान संपदा में निश्चय ही वृद्धि की है।

'अध्यात्म उपनिषद' इस बृहद ग्रंथ में ओशो के सत्रह प्रवचन संकलित किए गए हैं। आज तक अनेक समालोचकों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से उपनिषदों का समालोचन किया है। ओशो ने भी अपने प्रवचनों में उपनिषदों के सौंदर्यपूर्ण विचारों की मीमांसा की है और वह उनकी मौलिक, तत्त्वान्वेषी तथा सर्वांगीण बुद्धि की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति है।

उपनिषदों के अंतरंग में ओशो की तरह स्वच्छ और सूक्ष्म दृष्टि से शायद ही किसी ने झांका होगा। सागर की सतह पर तैरनेवाले अनेक लोग होते हैं, लेकिन उनकी तलहटी में पैठकर वहां छिपे हुए रत्न अपनी अंजुरी में समेट कर किनारे पर खड़े हुए प्यासों तक ले आनेवाला ओशो समान तलस्पर्शी अन्वेषक कभी-कभार अवतरित होता है। जब तक सौंदर्य दृष्टि से तथा विश्लेषक बुद्धि से उपनिषदों का मंथन न किया जाए तब तक उनका अनोखापन ख्याल नहीं आ सकता। केवल बुद्धि के द्वारा यह मंथन प्रक्रिया संभव नहीं है। इसके लिए आवश्यक है द्रष्टा ऋषियों की गहन चिंतनशीलता तथा वैश्विक जीवन के साथ तादात्म्य करने वाली विशाल सहानुभूति। ओशो उपनिषदों के प्रवाह से एकाकार हो गए हैं। अतः मैं कहना चाहूंगा कि

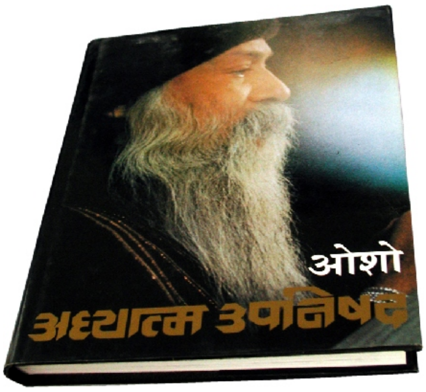

उनके प्रवचन उपनिषदों का ही विकसित दर्शन है।

मेरी दृष्टि में वह अनुभव अत्यंत महत्वपूर्ण है जो जिज्ञासु पाठक और चिंतक को इन प्रवचनों को पढ़ने के बाद होता है। मैं नहीं सोचता कि सिर्फ एक बार पढ़ने से ही इन प्रवचनों के विचार हम समझ पाएंगे। पूर्व पठित शब्दों का बाह्य स्पर्श और नाद अंतस से निष्कासित कर देना बहुत जरूरी है। यह आसान नहीं है। ओशो के शब्दों की छवि किसी लावण्यमयी नृत्यांगना की भांति दर्शनीय तथा श्रवणीय है। मनन की सरहद इस दर्शन और श्रवण के पार शुरू होती है। ये प्रवचन, वह स्थिरमति अन्वेषक अधिक स्पष्टता से समझ पाएगा जिसने मनन के इस प्रांत में दृढ़ता से पदार्पण किया है। प्रतिभाशालियों के शब्द इतने अर्थगर्भित होते हैं कि उनकी सुघड़ बनावट ही उनके अर्थों तक पहुंचने में अवरोध बन जाती है। और पाठक महज शब्दों की रूप-मोहिनी से सम्मोहित हो जाता है। ओशो की शब्द-शैली विमुग्ध कर देती है। उसका सम्मोहन हटाकर, पीछे अवगुंठन के भीतर छिपा हुआ अर्थ यथार्थतः, संवेद्य मनस के द्वारा ग्रहण करना जरूरी है।

उपनिषद की समाप्ति पर ऋषि कहते हैं, 'सदा आनंदरूप अपने आत्मा में हूं। न मेरा अब कोई और ज्ञान है, न मेरी कोई दृष्टि है, और न मुझे कुछ सुनाई पड़ता है; मेरी कोई इंद्रियां अब काम नहीं करतीं। अब तो मेरी भीतर सिर्फ एक ही घटना घट रही है, कि मुझे सदा आनंद अनुभव हो रहा है। और यह जो मेरे भीतर आज मुझे अनुभव में आ रहा है, यह विलक्षण है, अद्वितीय है। कोई उपमा नहीं, जिससे मैं इसे समझाऊं। कोई प्रतीक नहीं, जिससे मैं इसकी व्याख्या करूं।

'मैं स्वयं ही अपने लक्षणवाला हूं।

'मैं असंग हूं, शरीर रहित हूं, बिना चिन्हवाला हूं, मैं ही श्री हरि हूं; अत्यंत शांत हूं, मैं अनंत हूं, परिपूर्ण हूं और प्राचीन से प्राचीन हूं।'

ओशो कहते हैं कि यह प्रगाढ़ अनुभूति उपनिषदों के चिंतन-मनन से प्राप्त हो सकती है। स्वयं को विसर्जित करने के पश्चात जो शेष रहता है वही जीवन का सार है। अंतस्तल में सतत प्रज्वलित अहंकार की ज्योति जब बुझ जाती है और विश्वात्म वृत्ति का नूतन प्रकाश चारों ओर फैल जाता है, तब ब्रह्म-उपलब्धि होती है। इसी उपनिषद मन और बुद्धि का विलास नहीं है, वह जीवन का संपूर्ण विकास है। ओशो की यह विचार-शलाका उपनिषदों पर एक नई रोशनी डालती है।

ओशो कहते हैं, उपनिषद मन का विलास नहीं, जीवन का रूपांतरण है।

वस्तुतः मेरा यह अधिकार कतई नहीं है कि मैं ओशो के प्रवचनों पर कुछ लिखूं। फिर भी विनम्र, जिज्ञासु पाठक को प्रेम का एक अधिकार सहज ही प्राप्त होता है। उसका मैंने आनंदपूर्वक उपयोग कर लिया है। मैं इसे एक सौभाग्यशाली संयोग मानता हूं कि मुझे ओशो के विषय में कुछ कहने-सुनने का अवसर मिला। मेरा एक और सौभाग्य है कि मैंने इसी काया में, इन्हीं आंखों से ओशो को देखा। उन्हें कानों से, प्राणों से, बुद्धि और भाव से सुना। एक प्रज्ञावान की सन्निधि में कुछ क्षण बिताए। यह भी एक उपनिषद ही कहलाएगा।

– डॉ. निर्मल कुमार फडकुले
(सुप्रसिद्ध लेखक एवं कवि)